भूमिका

दो कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन अपने आप में एक विशिष्ट आलोचकीय पद्धति है । इस पद्धति में रचना के विविध आयामों पर व्यापक रूप से चर्चा होती है तथा निष्कर्ष निकाले जाते हैं। रचनाएं अपने समय, समाज और दर्शन की उपज होती है। कोई भी सार्थक रचना अपने परिवेश के अनुरूप दूसरे समाज की निजता से भी जुड़ जाती है। इस तरह साहित्य मौलिक मूल्यों के मानदंडों पर विश्व साहित्य की ऊँचाई पर पहुँचता है। भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय साहित्य में विभाजन और सांप्रदायिकता के आलोक में रची गयी एक उत्कृष्ट रचना तो है ही साथ ही इसकी पहचान विश्व पटल पर भी है और अमृता प्रीतम कृत पंजाबी उपन्यास 'पिंजर' मूल रूप से देश के विभाजन के साथ संबंधित है। देश विभाजन से संबंधित पंजाबी में और बहुत-सा कथा साहित्य लिखा गया है, पर इस प्रकार के समूचे साहित्य में 'पिंजर' की सबसे अधिक चर्चा हुई है। इन दोनों ही रचनाओं में मूल्यों का ह्रास, उत्थान और मनुष्य के भीतर मूल्य बोध की स्पष्ट झलक मिलती है।

'तमस' और 'पिंजर' के रचनात्मक मूल्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन दोनों के बीच एक समानता का तार जुड़ा हुआ है। इन दोनों रचनाओं में मूल्यों की खोज, गिरते-टूटते नैतिक मूल्य, विभाजन की विभीषिका, समाज में स्त्रियों की स्थिति, उसके संघर्ष का, हाशिये पे आए इंसानी रिश्तों का, कट्टरता का पोषण और रूढ़ियों को बढ़ावा देने वाले समाज का जीवंत चित्रण हुआ है।

देश के महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालयों के शोध-प्रबंधों के अवलोकन के बाद मैंने पाया कि अभी तक 'तमस' और 'पिंजर' को लेकर तुलनात्मक अध्ययन पर कहीं भी काम नहीं हुआ है। इसलिए मेरी रोचकता और बढ़ गयी और मैंने अपने एम. फिल. शोध के लिए इन दोनों रचनाओं को चुना। शोध कार्य मूलतः मानव जीवन में मूल्यों के बोध को केंद्र में रखकर किया गया है। मूल्य हमारे जीवन के विचार एवं विश्वास या आस्था हैं जो हमें वैसा करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं जो हम करते हैं; और वैसा बनने के लिए प्रेरित करते हैं जैसा हम होते हैं। मूल्य हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं

सामाजिक व्यवहार के नियामक होते हैं, ये हमारे व्यवहार को अपेक्षित दिशा में निर्देशित करते हैं एवं हमें उचित-अनुचित, अपेक्षित-अनपेक्षित, स्वीकार्य-अस्वीकार्य, आदि के आकलन के लिए मानदंड प्रदान करते हैं।

ये दोनों ही उपन्यास अपने मूल्यों के आधार पर लोकप्रिय हुए हैं, लोकप्रियता के मूल्यों के आधार पर प्रसिद्ध नहीं। लघु शोध-प्रबंध " 'तमस' एवं 'पिंजर' में मूल्य बोध" दोनों रचनाकारों की महत्त्वपूर्ण कृतियों में मूल्य बोध को केंद्र में संजोए हुए हैं। कुछ ज़रूरी तथ्यों के सहारे इस प्रबंध का अध्यायीकरण तीन अध्यायों एवं नौ उप-अध्यायों में किया गया है।

प्रथम अध्याय : **'मूल्य बोध : आशय एवं महत्व'** में मैंने मूल्य शब्द को स्पष्ट करते हुए उसके विभिन्न पक्षों पर विचार किया है। इसे कुल **तीन उप-अध्यायों** में विभाजित करते हुए जहां **प्रथम उप-अध्याय** में मूल्य बोध के अर्थ और परिभाषा को स्पष्ट किया गया है वहीं **दूसरे** और **तीसरे उप-अध्याय** में मूल्य की आवश्यकता और समय के साथ उसमें आये बदलावों को रेखांकित किया गया है।

दूसरा अध्याय : **'सामान्य परिस्थितियों में मूल्य बोध'** के अंतर्गत मैंने मानव जीवन की सामान्य परिस्थितियों में मूल्य बोध के विषय में चर्चा की है। इसे भी कुल **तीन उप-अध्यायों** में विभाजित किया गया है। **प्रथम उप-अध्याय** में विभाजन के समय हुए सांप्रदायिक दंगों के कारण सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों का जो ह्रास हुआ उस ओर संकेत किया गया है। वहीं **दूसरे** एवं **तीसरे उप-अध्याय** में विभाजन के समय परिस्थितियों में आए बदलाव के कारण धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मूल्यों में जो परिवर्तन हुआ उसका मूल्यांकन है।

तीसरा अध्याय : **'संकट कालीन परिस्थितियों में मूल्य बोध'** के अंतर्गत विपरीत परिस्थितियों में मानव मूल्यों में आए सकारात्मक-नकारात्मक परिवर्तनों को दर्शाया है। इसके **तीन उप-अध्यायों** में **प्रथम उप-अध्याय** सांप्रदायिक संघर्ष के समय मानवीय मूल्यों के विघटन से संबंधित है। **दूसरे उप-अध्याय** में यह बताया गया है कि विभाजन एक ऐसी बड़ी घटना थी, जिसने हिंदू-मुस्लिम धर्म के

लोगों के जीवन के हर पक्ष को प्रभावित किया। **तीसरे उप-अध्याय** में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि विस्थापन के समय मासूम लोगों को किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा।

उपसंहार : इसमें समग्र अध्यायों एवं उप-अध्यायों का मूल्यांकन किया गया है।

किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए एक प्रेरणा, सहयोग और दिशा निर्देश की आवश्यकता होती है। सर्वप्रथम मैं उन रचनाकारों का आभारी हूँ जिनकी कृतियों के माध्यम से यह शोध-कार्य पूर्ण हुआ। तत्पश्चात मैं अपने शोध निर्देशक एवं मार्गदर्शक डॉ. रूपेश कुमार सिंह का आभारी हूँ, जिन्होंने विषय के चयन से लेकर शोध कार्य में आयी समस्याओं तक के निवारण में महत्वपूर्ण सहयोग किया। साथ ही साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्ष एवं कुलानुशासक प्रो. सूरज प्रसाद पालीवाल जी का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शोध कार्य के लिये लगातार प्रोत्साहित किया। हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे अपेक्षित सहयोग प्रदान किया।

प्रस्तुत लघु शोध को पूरा करने में गुरुजनों के अतिरिक्त जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मार्गदर्शन और प्रेरित किया, मैं उनके प्रति हृदय से आभारी हूँ। विशेष रूप से मेरे पिता और बहन का पूरा सहयोग रहा, जिन्होंने मुझे अपने से दूर रखकर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उनके सहयोग को शब्दों में अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है परन्तु इतना अवश्य कहूँगा कि स्वयं कठिनाइयों को सहन करते हुए भी मेरे अध्ययन एवं लेखन में मुझे जिस तरह से प्रोत्साहित किया उसके लिये मैं उनके प्रति आजीवन ऋणी रहूँगा।

सुअम्बदा कुमारी, आभा मलिक, विभा मलिक, रीटा रानी, रजनी झा, ईश्वर कान्ति मुर्मू, प्रकाश चंद बैरवा, रजनेश कुमार, कुमार अभिषेक के साथ-साथ अपने सभी दोस्तों के प्रति भी आभारी हूँ, जिन्होंने अपने अमूल्य क्षणों में से कुछ समय निकालकर मेरी समस्याओं का समाधान

किया। इस लघु शोध-प्रबंध में त्रुटियों का यथा संभव निराकरण करने का प्रयास किया गया है, फिर भी कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों तो मैं उसके लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

आशीष कुमार